उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सहयोग से

"स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की विकास-यात्रा"

विषय पर

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

3-4 फरवरी, 2018

प्रेषक :

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़ - गोरखपुर

☎ 9794299451, 7897475917

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

"स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की विकास-यात्रा"

भाषा मानव को मनुष्य बनाती है। भाषा वह प्रथम महत्त्वपूर्ण कारक है जो मानव को पशु से अलग पहचान देती है। जीव रूपी मानव को जब भाषा मिलती है तब वह बुद्धि, विवेक, कौशल, सभ्यता–संस्कृति का हिस्सा बनता है। समाज का अंग बनता है। भाषा अपने–आप को पहचानने का साधन है। भाषा आत्मबोध कराती है। भाषा जीवन–जीने का ढंग सिखाती है। भाषा यथार्थ की पहचान कराती है। सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' लिखते हैं कि– "अपनी अस्मिता की पहचान, मूल्यबोध और यथार्थ की पहचान के तीन रास्ते, और अन्तहीन रास्ते, भाषा हमारे लिए खोल देती है।" इसी आधार पर वे कहतें हैं कि भाषा सस्कृति की बुनियाद होती है। स्वाभाविक है मनुष्य जिस भाषा में जन्म लेता है, जिसमें पलता है, जिसमें सीखता है उसी भाषा में सोचने–समझने की शक्ति का विकास होता है। उसी भाषा में वह मौलिक चिन्तन करता है। उसी भाषा में वह सपने देखता है। उसके कल्पना–लोक की भाषा वही होती है। यही बात मनुष्य के साथ–साथ समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र पर लागू होती है। हर समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र की अपनी भाषा होती है जिसमें वह राष्ट्र प्रकट होता है। अपनी भाषा में ही समाज, संस्कृति, राष्ट्र के अस्तित्व की पहचान होती है। अपनी भाषा में ही समाज, संस्कृति और राष्ट्र मुखर होता है। अपनी भाषा में ही वह विकसित होता है। भाषा के उत्थान एवं पतन में सम्बन्धित समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र का उत्थान–पतन निहित होता है।

भारतीय समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र का अभ्युदय क्रमशः प्राकृत, पालि, संस्कृत और आधुनिक युग में हिन्दी भाषा में हुआ है। भारत की क्षेत्रीय भाषाएँ भारत के उपर्युक्त भाषा–परिवारों से ही निकली हैं। विदेशी आक्रमणों की आँधी में स्वराज खो चुके भारत में संस्कृत–भाषा का स्थान धीरे–धीरे हिन्दी ने ग्रहण किया और मध्ययुगीन भारत की भाषा बनती गई। ब्रिटिश उपनिवेशवादी युग में ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीय शिक्षा–व्यवस्था को नष्ट कर अंग्रेजी–शिक्षा पद्धति के विकास के साथ उन्नीसवीं भाताब्दी में अंग्रेजी भाषा शिक्षा की भाषा बनी। परिणामतः बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी–शिक्षा–पद्धति का जैसे–जैसे प्रसार हुआ वैसे–वैसे शिक्षा रोजगार का पर्याय बनती गयी और अंग्रेजी भाषा का प्रभाव बढ़ता गया।

भारत की आजादी के साथ जैसा सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण होना चाहिए था, सम्भव नहीं हुआ। आजाद भारत में ब्रिटिश शिक्षा पद्धति एवं अंग्रेजी भाषा को मैकाले के मानस–पुत्रों ने महत्त्वपूर्ण बनाए रखा। परिणामतः आजाद भारत में एक नए सामाजिक वर्ग का उदय हुआ जो अपनी सांस्कृतिक विरासत, अपनी परम्परा, अपनी भाषा से कटता गया। तथाकथित यह आभिजात्य वर्ग भी भारतीय भाषाओं, विशेषकर संस्कृत एवं हिन्दी के विकास में रोड़ा बनकर खड़ा रहा। शासन–प्रशासन में इस आभिजात्य वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका के कारण अंग्रेजी शिक्षा रोजगार का आधार बनती गयी और भारतीय भाषाएँ उपेक्षित होती गयीं। यद्यपि इन्हीं भारतीय भाषाओं के साहित्य ने साम्राज्यवाद–विरोधी भावना का विकास कर भारत को आजादी दिलाई। मुख्य रूप से बंगला, मलयालम, तमिल, मराठी, उड़िया और हिन्दी भाषा ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वस्तुतः हिन्दी का विकास राष्ट्रीय चेतना के विकास के साथ हुआ और यह भारत वर्ष की समग्र संस्कृति की संवाहिका बनी। अज्ञेय के शब्दों में 'आजाद भारत में भारतीय अस्मिता एवं राष्ट्रीय बोध के आक्रान्त होने के कारण हिन्दी भी आक्रान्त है। आज हम खतरे में हैं जिससे हिन्दी हमें बचा सकती है।'

इक्कीसवीं सदी में आज जब भारत अपने राष्ट्रीय अस्मिता एवं आत्मबोध के साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण के मार्ग पर चल पड़ा है, स्वभाषा विशेषकर हिन्दी को अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी ही होगी। आजाद भारत में हिन्दी ने अपनी विकास–यात्रा में अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं। हिन्दी की विकास–यात्रा एवं उसकी वर्तमान की भूमिका पर विमर्श वर्तमान युग की माँग है। अतः 'स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की विकास –यात्रा' विषय पर 'उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान' के सहयोग से दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के हिन्दी–विभाग द्वारा 3 एवं 4 फरवरी 2018 को आयोजित किया जा रहा हैं। कार्यशाला मे उक्त विषय को निम्न उप–शीर्षकों में बॉट कर विमर्श होगा।

1. **भारतीय संविधान के निर्माण के समय हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने पर सम्बन्धित विशेषज्ञों के मत।**
2. **भारतीय संविधान में हिन्दी?**
3. **आजाद भारत के प्रारम्भिक डेढ़ दशक में हिन्दी की विकास–यात्रा एवं राज्य तथा समाज/साहित्यकारों/हिन्दी सेवियों द्वारा किए गए प्रयत्न।**
4. **बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चार दशको में हिन्दी की विकास यात्रा एवं राज्य तथा समाज/साहित्यकारों/हिन्दी सेवियों द्वारा किए गए प्रयत्न।**
5. **भारत के राज्य–केन्द्र सरकार के कार्यालयों में भाषायी उपयोग के रुप में हिन्दी एवं उसकी विकास यात्रा।**
6. **भारत के न्यायपालिका की भाषा और हिन्दी।**
7. **हिन्दी के प्रचार–प्रसार में प्रादेशिक हिन्दी–सेवी संस्थाओं का योगदान।**
8. **हिन्दी भाषा की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करने वाले अनन्य हिन्दी समर्थक।**
9. **हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य।**

शोध-प्रपत्र

कार्यशाला में प्रस्तुत शोध–प्रपत्र/आलेख में विषय वस्तु का उद्देश्य, प्रयुक्त विधितन्त्र एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों की सीमा में ही शोध–प्रपत्र स्वीकृत किये जायेंगे। हिन्दी–भाषा में रुचि रखने वाले अध्यवसायी शोधार्थियों एवं विद्वानों के शोध पत्र/आलेख आमंत्रित हैं। शोध–पत्र/आलेख अधिकतम 2500 शब्दों में 15 जनवरी 2018 तक ई–मेल mpmw2018@gmail.com पर पहुँच जाने चाहिए। शोध – प्रपत्र ए–4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोजिंग एवं सी.डी., (वाक्मैन चाणक्य) महाविद्यालय के पते पर भेजें। निर्धारित समय से पूर्व प्राप्त शोध–पत्र का प्रकाशन पुस्तक के रूप में किया जायेगा। शोध प्रपत्र संस्कृत/हिन्दी भाषा में स्वीकृत होंगे।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क रू. 500.00 है। आमंत्रित अतिथियों/विषय–विशेषज्ञों को पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं है। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में **'प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़'** के नाम से अथवा नकद, गोरखपुर में देय अनुमन्य होगा।

यात्रा-व्यय/आवास/भोजन-व्यवस्था

आमंत्रित अतिथि एवं कार्यशाला हेतु स्वीकृत शोध पत्र/आलेख प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागी प्रोफेसर/एसो. प्रोफेसर को ए.सी. द्वितीय श्रेणी एवं असिस्टेंट प्रोफेसर एवं शोधार्थियों को ए.सी. तृतीय श्रेणी का यात्रा–व्यय दिया जायेगा। आवास एवं भोजन–व्यवस्था आयोजकों की ओर से निःशुल्क रहेगी।

गोरखपुर

गोरखपुर महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर–पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल, सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित हैं। भगवान बुद्ध का गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग 90 किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण–स्थली कुशीनगर 50 किमी. की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन सन्त एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के पोषक सन्त कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से 20 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग 100 किमी. है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क–मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डु गोरखपुर से 400 किमी. की दूरी पर है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक की जा सकती है। नगर–क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें गोरखनाथ–मंदिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मंदिर आदि प्रमुख हैं। फरवरी माह में गोरखपुर का मौसम प्रायः सामान्य एवं सुहावना रहता है। रात्रि में हल्की ठंड पड़ सकती है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सहयोग से

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

3-4 फरवरी, 2018 ई.

विषय

"स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की विकास यात्रा"

पंजीयन प्रपत्र

1. नाम .....
2. पद .....
3. विश्वविद्यालय/महाविद्यालय/संस्था .....
   .....
   .....
4. पत्र व्यवहार का पता .....
   .....
   .....
   दूरभाष/मोबाइल .....
   फैक्स .....
   ई-मेल .....
5. शोध-प्रपत्र-शीर्षक .....
   .....
   .....
6. पंजीयन शुल्क- रु. 500/-
   बैंक ड्राफ्ट सं. .....
   बैंक का नाम .....
   बैंक ड्राफ्ट जारी होने की तिथि .....

दिनांक ..... हस्ताक्षर.....

आयोजन-समिति

मुख्य संरक्षक

परमपूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर

महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज

मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश/प्रबन्धक, प्रबन्ध समिति

प्रो. यू.पी. सिंह

पूर्व कुलपति/अध्यक्ष प्रबन्ध समिति

संरक्षक

प्रो. विजय कृष्ण सिंह

मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त

कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

अध्यक्ष

डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सचिव/संयोजक

डॉ. आरती सिंह

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

सदस्य

डॉ. विजय कुमार चौधरी

अध्यक्ष, भूगोल विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

डॉ. आर.एन. सिंह

अध्यक्ष, प्राणि विज्ञान विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

डॉ. शिवकुमार वर्नवाल

अध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग,महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

अध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

डॉ. राजेश शुक्ल

अध्यक्ष, वाणिज्य विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

श्रीमती शिप्रा सिंह

अध्यक्ष, बी.एड. विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

श्री सुबोध कुमार मिश्र

अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सहयोग से

"स्वतन्त्र भारत में हिन्दी की विकास-यात्रा"

विषय पर

दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

3-4 फरवरी, 2018

आयोजक

हिन्दी विभाग

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़ - गोरखपुर

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

☎ 7897475917, 9794299451
Website : www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com
workshop E-mail : mpmw2018@gmail.com